<u>हरियाली के श्रृंखलाबद्ध सेतु</u>

आराधना पटनायक,
भा0प्र0से0
उपायुक्त, लोहरदगा।

<u>पृष्ठभूमि :–</u> लोहरदगा जिला कृषि प्रधान एवं आदिवासी बहुल क्षेत्र है जिसके कुल कार्यबल का

लगभग 80Á हिस्सा कृषि एवं इससे संबंधित कार्यों से जुड़ा है। जनगणनीय आंकड़ों के अनुसार जिले की 81% आबादी गांवों में एवं 19% आबादी शहरी एवं कस्बाई क्षेत्रा में रहती है। गांवों में जीविका एवं आमदनी का मुख्य आधार कृषि है एवं सिंचाई कृषि के सभी अवयवों में सबसे आवश्यक एवं महत्वपूर्ण है।

वर्ष 1983 तक जिले में 4 छोटे छोटे वीयर एवं सतही प्रवाह की छोटी योजनाएं थी। 19 विद्युत चालित उद्वह सिंचाई योजनाएं थी, जो कालान्तर में विद्युत व्यवस्था के बाधित हो जाने के कारण अकार्यरत हो गयी। इस प्रकार जिले की कुल कृषि योग्य भूमि का 6% से 7% भू–भाग ही सिंचित क्षेत्र के अन्तर्गत था।

वर्ष 1990–91 में भण्डरा प्रखण्ड अन्तर्गत हिरणकट्टा मध्यम सिंचाई योजना का निर्माण किया गया। झारखण्ड राज्य गठन के बाद वर्ष 2001–02 में एकागुड़ी मध्यम सिंचाई योजना का जीर्णोद्धार, 5 अद्द चेकडैम, 16 अद्द माईक्रोलिफ्ट योजनाओं का निर्माण किया गया। इसके पश्चात् सम्पूर्ण ग्रामीण रोजगार योजना **(SGRY)** के तहत कुल 19 चेक डैम का निर्माण किया गया है जो अपनी सृजित क्षमता 1000 हेक0 के अनुसार सिंचाई देने में सक्षम है। इसके अतिरिक्त कई सिंचाई कूप, तालाब आदि का भी निर्माण किया गया परन्तु तमाम् प्रयासों के बावजूद जिले की 10Á – 11 Á भू–भाग को ही सिंचित किया जा सका। फलस्वरूप जनसंख्या के बढ़ते दबाव, कृषि पर अत्यधिक

निर्भरता एवं एकल कृषि कार्य केवल जीवन निर्वाह का निर्बल साधन मात्र बना रहा है। जिले में 1200 मी0मी0 वर्षा होती है परन्तु पठारी पृष्ठ भूमि एवं जल संग्रहण के समुचित संरचना के आभाव के कारण वर्षा जल भूगर्भ में समाने के बजाय तेजी से बहकर निकलता रहा है। विगत कुछ वर्षों में जिले में औसत वर्षा का स्तर भी कमत्तर हुआ है जिसका नकारात्मक प्रभाव कृषि विकास कार्यों पर पड रहा था। मानसून में उफनती नदी नाले सालों भर छोटी नाली मात्र रह जाती है जिसका कृषि कार्य हेतु विशेष महत्व नहीं था। समय से एवं समुचित मात्रा में सिंचाई के अभाव में पैदावार कम होती है एवं किसानों को खेती का लाभकारी मूल्य नहीं मिल पाता था। ऐसी परिस्थिति में खेती में किसानों की रूचि कम होती गई एवं जीविका के लिये अन्यत्रा जाना पड़ता था। परन्तु यह स्पष्ट था कि समाज को खुशहाल बनाने के लिये ग्रामों में खेती की उन्नति ही स्थायी विकल्प है।

चोरगाई I चेक डेम

पारम्परिक तरीकों से कई स्थलों पर ग्रामीणों द्वारा कच्चा बॉध बनाकर सिंचाई व्यवस्था की जाती थी परन्तु ऐसे बॉध कुछेक माह में बह जाते थे। अतः ग्रामीणों द्वारा इन्ही तीक्ष्ण ढलानों में बहने वाली नदी/ नालों पर जल संग्रहण हेतु स्थायी बॉध की मांग निरन्तर किया जाने लगा।

इसी उद्देश्य से राष्ट्रीय सम विकास योजना में सिंचाई प्रक्षेत्र को प्रमुखता दी गई ताकि जिले से पलायन रोका जा सके एवं कृषि मात्र आजीविका ही नहीं वरन अतिरिक्त आय का भी साधन बने।

<u>योजना चयन एवं कार्यान्वयन :–</u> वर्ष 2004–05 एवं 2005–06 में एक अभियान के तहत क्षेत्र भ्रमण कर 100 चेकडैम के साथ लगभग इतनी ही माईक्रोलिफ्ट योजनाओं का स्थल चयन किया गया। स्वयं उपायुक्त एवं जिले के वरीय पदाधिकरियों द्वारा पहाड़ी की तली में बसे गांवों कां सघन दौराकर सदावाहिनी नालों पर उपयुक्त चेकडैम स्थलों का चयन किया गया। ग्रामीणों के सहयोग से वैसे स्थलों का चयन किया गया जहां किसान मिट्टी का कच्चा बांध बनाकर सिंचाई करते थे।

योजनाओं के निर्माण में उनकी भागीदारी एवं अंशदान सुनिश्चित करने हेतु लाभुक समितियों/निगरानी समितियों का गठन किया गय। दूसरी ओर पूर्व के कटु अनुभवों के आधार पर चेक डैम / लिफ्ट सिंचाई के रख–रखाव की जिम्मेवारी भी जल उपभोक्ता समिति को दिया गया।

पिलुवाही चेक डैम

इन सिंचाई योजनाओं के निर्माण से विगत दो वर्षों में जिले में सिंचित क्षेत्रा का प्रतिशत 11–12 प्रतिशत से बढ़ाकर 18 Á तक लाया जा चुका है।

- ➢ **सफलता के कुछ दृष्टांत –:**

- ❖ **प्रखण्ड किस्को**

  पंचायत – हिसरी

हिसरी में मेरले, जोगियारा, जम्हरे, बोगा आदि महत्वपूर्ण नदियॉ/ नाला है जिसपर श्रृखलाओं में चेकडैम का निर्माण किया गया है। आज हिसरी पंचायत की 60Á भूमि सिंचित है, जो जिला का सर्वाधिक सिंचाई सुविधा वाला पंचायत है।

- ❖ **चोरगाई ᴵ चेक डेम (लागत – मो012.967 लाख रू0)–:**

चेक डैम 12 मी0 लम्बी, 2 मीटर ऊंची कंक्रीट/ बोल्डर से बनी इस संरचना में सतही बहाव के माध्यम् से 100 एकड़ भूमि सिंचित करने की क्षमता है। यह श्रृंखला का पहला चेक डैम है, जो पहाड की ठीक तलहटी पर निर्मित है। सामान्य वर्षा में भी संग्रहित जल वीयर के उपर से बहता है तथा आज कृषक 130 एकड़ में खरीफ फसल का सफलतापूर्वक एवं पूर्ण आत्म विश्वास के साथ खेती कर रहे हैं। इस चेक डैम ने अनावृष्टि पर निर्भरता को लगभग समाप्त कर दिया है।

- ❖ **चोरगाई ᴵᴵ चेक डैम–:**

इस श्रृंखला की दूसरी चेक डैम की लम्बाई 12 मी0 तथा ऊचांई 3.50 मी0 है। इसका निर्माण सतही बहाव के माध्यम् से 140 एकड़ भूमि को सिंचित करने हेतु किया गया है।

❖ चन्दा चेक डैम–:

इस श्रृंखला का तीसरा चेक डैम चन्दा चेक डेम है जिसकी लम्बाई 12 मी0 एवं ऊंचाई 4.0 मी0 है। पूर्व से निर्मित कच्चे परन्तु अत्याधिक महत्वपूर्ण कच्चे बॉध के भारी वर्षा के कारण बह जाने के पश्चात् इस स्थायी संरचना का निर्माण किया गया है। इसकी क्षमता 150 एकड़ भू खण्ड को सिंचित करने की है।

❖ मेरले चेक डैम–:

हुटाप चेक डैम

यह इस श्रृंखला की चौथी चेक डैम है। जिसकी लम्बाई 12 मी0 तथा ऊचांई 5.00 मी0 है तथा सतही बहाव द्वारा सिंचाई क्षमता 350 एकड़ खरीफ फसल है।

❖ जोगियारा एवं जम्हरें चेक डैम–:

इन दोनो चेक डैम की क्षमता 200 एकड़ भुखण्ड से अधिक है तथा सतही बहाव द्वारा सफलता पूर्व भूमि सिंचित किया जा रहा है।

❖ बोगा नाला चेक डैम–:

खरीफ फसल हेतु यह चेक डैम से सफलतापूर्वक 125 एकड भूखण्ड को सिंचित किया जा रहा है। कुछ दिन पूर्व तीव्र पहाडी धारा के कारण क्षतिग्रस्त इसके दाहिने हिस्से में विशेष सुरक्षा दिवार का निर्माण कर दिया गया है।

सभी चेक डेमों में सिल्ट इजेक्टर गेट लगाया है जो बाढ़ के दौरान जमे हुए सिल्ट को बाहर निकालने तथा आवश्यकतानुसार सिंचाई हेतु जल संग्रहित रखने की व्यवस्था सुनिश्चित करता है।

सभी चेक डेमों में लिफ्ट सिंचाई का प्रावधान है, जो चेक डैम की सिंचित क्षमता के विस्तार के साथ–साथ रबी फसल एवं सब्जी के खेती हेतु सिंचाई सुलभ करा रहा है।

❖ कुडू प्रखण्ड की चेक डैम श्रृंखला :– –:

कुडू प्रखण्ड के अत्यधिक महत्वपूर्ण नाला सपही नाला के दोनो किनारों में व्यापक पैमाने पर पूर्व से खेती की जा रही है। यदपि इसमें सालों भर पानी रहता है परन्तु अपने तीक्ष्ण ढलानों के कारण मानसून के पश्चात् इसमें जल जमाव का अभाव रहता था।

अतः इस नाला पर श्रृंखला में, चिताकोनी चेक डैम, जिदों चेक डैम,

माराडीह – । एवं माराडीह – ।। चेक डैम, पण्डरा चेक डैम एवं उडुमुडु चेक डैम का निर्माण किया गया। उक्त चेक डेमों द्वारा सालोभर लिफ्ट के माध्यम से सिंचाई हेतु जल सग्रंहन को सुनिश्चित कर दिया गया है। यह सब्जी की खेती एवं फसल के साथ खरीफ के सहायक सिंचाई व्यवस्था के रूप में वरदान साबित हुआ है, जिससे 1000 एकड़ से अधिक भूमि को सिंचित हो गया है।

❖ <u>भण्डरा प्रखण्ड की चेक डैम श्रृंखला :– –:</u>

भण्डरा प्रखण्ड जिले का मुख्य सब्जी एवं रब्बी फसल उत्पादक प्रखण्ड रहा है जिसकी प्रमुख पेरेनियल नाला बोक्टा नाला है। इसी नाला पर 1 से 2 कि0मी0 के अन्तराल पर श्रृंखला में भौरो बुलुआटोली, भौरो सुरैल डुबा, बोक्टा नाला–।, मसमानो, बोक्टा नाला – ।। एवं मसमानों – ।। चेक डैम का निर्माण किया गया है। इस श्रृंखला का मसमानों चेक डैम सबसे लम्बी 29 मी0 एवं ऊंचाई 3.0 मी0 वाला चेक डेम है जो 250 एकड़ भूमि को सिंचित कर रहा है। इस श्रृंखला से 1100 एकड़ भूमि सिंचित हो रही है। इस श्रृंखला ने तरबूज, सब्जी एवं रब्बी के खेती को संभव बनाकर कृषि कार्यों को व्यवसाय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

राष्ट्रीय सम विकास योजनान्तर्गत निर्माणाधीन 100 में से 52 चेक डैम पूर्ण हो चुका है जिसमें उपलब्ध पानी से बहुफसली खेती संभव हुआ है। इस साल के अन्त तक सभी चेक डैम के पूर्ण और माईक्रो लिफ्ट से सुसज्जित होने के पश्चात् कुल 50,000 हेक्0 कृषि क्षेत्र के 20Á क्षेत्र में सुनिश्चित सिंचाई संभव हो सकेगा। साथ ही भुगर्भीय जल स्तर से सुधार द्वारा पूर्व से निर्मित सिंचाई कूपों को नव यौवन प्राप्त होगा। सिंचाई सुविधा से सुसज्जित इन भूखण्डों में पारम्परिक कृषि के स्थान पर नकदी फसल को प्रोत्साहित करने को भी जिला द्वारा एक अभियान के तौर पर प्रारम्भ कर दिया गया है जिसकी सकारात्मक परिणति इन क्षेत्रों के ग्रामीण जन जीवन में दृष्टि गोचर होने लगा है।